निधि समर्पण के प्रेरक अनुभव 4 | भारत भूमि पर प्रवेश एक शौर्य गाथा 8 | हिन्दुत्व सतत अनुसंधान का नाम 11 | पाक टूटने के कगार पर 13

पाक्षिक

सहयोग राशि ₹ 5

पाथेय कण

फाल्गुन कृ. 2, युगाब्द 5122, वि.2077,1 मार्च, 2021

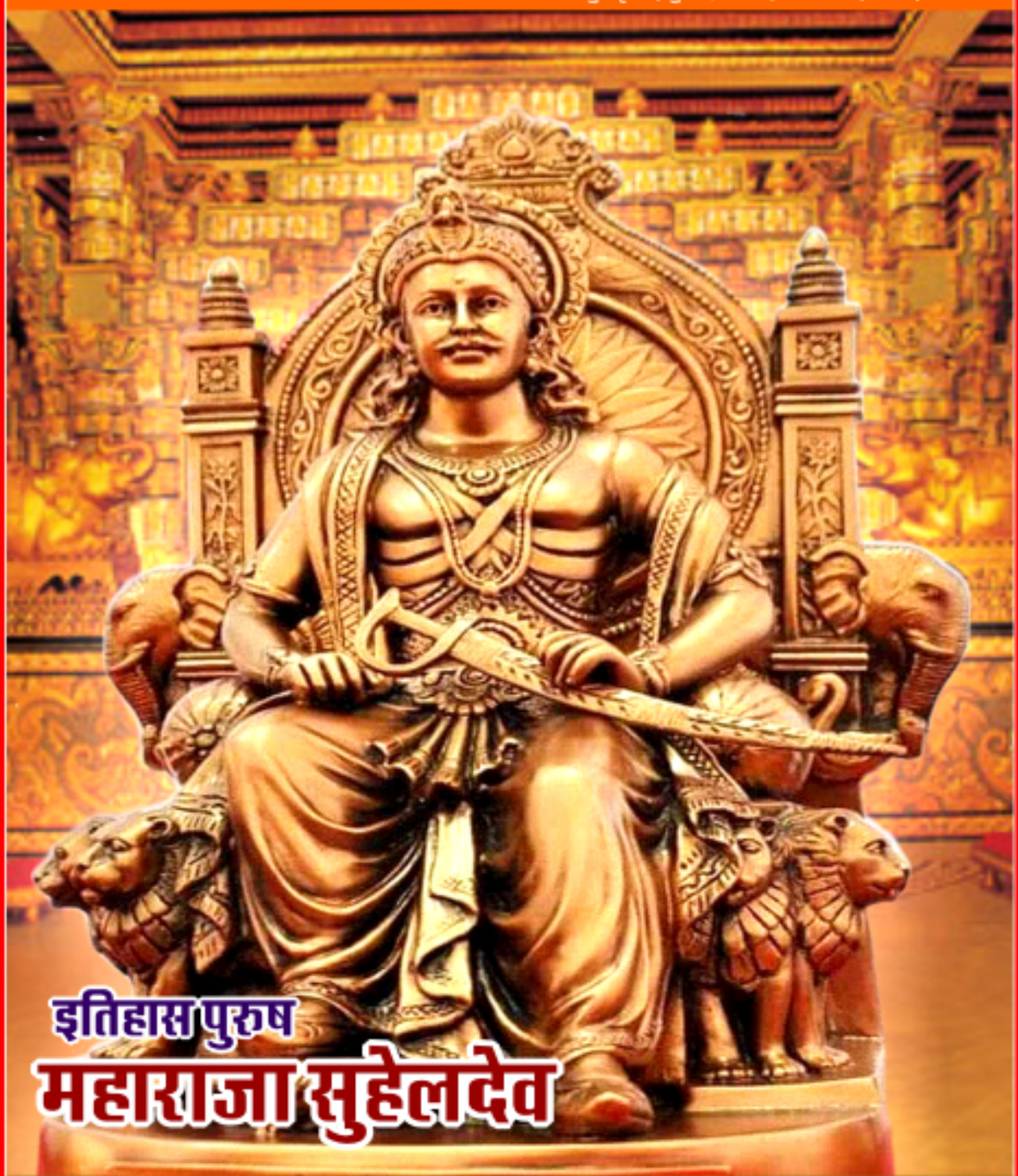

इतिहास पुरुष
महाराजा सुहेलदेव

patheykan@gmail.com www.patheykan.in @patheykan1

अभियान के हृदयस्पर्शी प्रसंग

1 फरवरी के अंक का आवरण पृष्ठ प्रेरणास्पद है। राम जन्मभूमि निधि समर्पण अभियान के हृदयस्पर्शी प्रसंग हर किसी पाठक के मन को राममय बनाने में सार्थक सिद्ध होंगे।

● **प्रेम शर्मा,** रजवास, टोंक

धर्मांतरण का इलाज

1 फरवरी के अंक में प्रकाशित ''धर्मांतरण का इलाज'' लेख सजगता का काम करेगा। अपने धर्म की गौरवशाली परम्परा की जानकारी में कमी होना तथा विचारों का मजबूत नहीं होना अपने धर्म से दूर होने का कारण बनते हैं। इस विषय पर हमें सोचना होगा। अभी चल रहे रामजन्मभूमि निधि समर्पण अभियान का समाज पर सकारात्मक प्रभाव होगा और उससे समाज एक होगा।

● **इंदु मोहन जांगिड़,** राजसमंद

संपादकीय चिंतनपरक

अत्यधिक सामग्री से युक्त कम पृष्ठ की पत्रिकाओं में उत्तम पाथेय कण पढ़कर जो संतोष मिलता है वह अकथनीय है। राममंदिर निधि समर्पण की जो बातें आपने उल्लेख की हैं वे आदर योग्य हैं। संपादकीय चिंतनपरक है। विशेष रूप से सुभाष बोस के 125वें जयंती वर्ष पर दी गई सामग्री भी सराहनीय है।

● **ओम हरित,** फागी, जयपुर

अंक संदर्भ : 1 व 16 फरवरी,2021

गौरवान्वित करने वाला प्रसंग

पाथेय कण के 1 फरवरी के अंक में आदर्श जन प्रतिनिधि के रूप में सुभाष बोस के कम वेतन लेने के विचार से अवगत करवाया। यह हम सभी भारतीयों के लिए गौरवान्वित करने वाला प्रसंग है।

● **बृजमोहन चाँडक,** जयपुर

किसान आंदोलन

किसान आंदोलन पर अंक में पढ़ा। पिछले ढाई महीनों से आंदोलन कर रहे किसानों और सरकार के बीच सहमति बनती दिखाई नहीं पड़ रही है। सरकार संसद द्वारा पारित कानूनों में भी संशोधन करने को तैयार है फिर भी इसे रद्द करने पर अड़े रहना समाधान में बाधा उत्पन्न कर रहा है। विपक्षी राजनीतिक दल इसे और बढ़ाने को प्रयासरत हैं। वह इन कानूनों को काले कानून घोषित कर रहे हैं परन्तु किसान नेता यह बताने में असफल रहे हैं कि इन कानूनों में काला क्या है?

● **अरुण बेरी,** जालंधर, पंजाब

प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगी

प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से पाथेय कण में अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की घटनाओं की सम्पूर्ण जानकारी मिल जाती हैं। पाथेय परिवार को धन्यवाद एवं बधाई ।

● **लक्षकार श्याम,** बावड़ी, जोधपुर

पाथेय कण 'पाक्षिक' सम्बन्धी विवरण

घोषणा पत्र-4 (नियम 8 के अनुसार)

1. प्रकाशन स्थान	*जयपुर*
2. प्रकाशन अवधि	*पाक्षिक*
3. मुद्रक का नाम	***माणकचन्द***
(क्या भारत का नागरिक है)	*हाँ*
पता	*4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर जयपुर-302017*
4. प्रकाशक का नाम	***माणकचन्द***
(क्या भारत का नागरिक है)	*हाँ*
पता	*4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर जयपुर-302017*
5. सम्पादक का नाम	***रामस्वरूप अग्रवाल***
(क्या भारत का नागरिक है)	*हाँ*
पता	*72/25 मानसरोवर, जयपुर -20*

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों। – कोई नहीं

मैं माणकचन्द एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 1 मार्च, 2021

माणकचन्द

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

हमें लिखें

पाथेय कण में प्रकाशित किसी समाचार/लेख या अन्य सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया/टिप्पणी या कोई सुझाव अथवा प्रकाशित सामग्री के विषय पर अपने विचार हमें व्हाट्सएप या मेल करें अथवा डाक से भेजें।

WhatsApp 79765 82011

patheykan@gmail.com

पाक्षिक
पाथेय कण

फाल्गुन कृष्ण द्वितीया
युगाब्द 5122, वि.2077
1 मार्च, 2021
वर्ष 36 : अंक 19

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
ज्ञानचंद गोयल

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
मो. 9929722111

अंक नहीं मिलने की सूचना अपने नाम व पते सहित व्हाट्सएप (WhatsApp) द्वारा निम्नलिखित मो.न. पर दें।
7976582011

E-mail:patheykan@gmail.com
Website : www.patheykan.in
Twitter : @patheykan1

सम्पादकीय

महाराजा सुहेलदेव हैं भारतीय समाज के प्रतीक इतिहास पुरुष

प्राचीन वर्ण व्यवस्था एक प्रकार का श्रम-विभाजन ही था और कर्म पर आधारित व्यवस्था थी परन्तु यह सदियों तक कठोर नहीं थी। अपनी प्रतिभा, ज्ञान व गुणों के आधार पर अन्य वर्णों का कार्य करने की पर्याप्त छूट हमेशा रही है। इसके बहुत से उदाहरण हैं।

महाराजा सुहेलदेव और उनके पुरखे इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण थे। समाज की अति पिछड़ी जाति से होने के पश्चात भी वे अपनी वीरता और प्रतिभा के बल पर राजा बने। महाराजा सुहेलदेव ने कई राजाओं को संगठित कर विदेशी तुर्क आक्रमण का सफल प्रतिकार किया और इतिहास-पुरुष बने। उनकी वीरता के किस्से जनश्रुतियों एवं लोककथाओं में जनमानस द्वारा अपनी स्मृति में संजोये गये हैं। यह भी इतिहास को सहेजने की एक भारतीय पद्धति है।

आज वर्ण व्यवस्था काल बाह्य हो गयी है, जो उचित ही है। व्यक्ति अपनी प्रतिभा, ज्ञान व रूचि के आधार पर, न कि जन्म के आधार पर, किसी भी व्यवसाय को चुनने तथा जीवन में आगे बढ़ने को स्वतंत्र है।

महापुरुष किसी भी जाति या वर्ण के रहे होंगे, वे इस देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए, चाहे वह किसी भी मत, मजहब, पंथ, जाति या प्रांत का क्यों न हो, पूजनीय एवं अनुकरणीय हैं। हम सब के पूर्वज एक ही थे, एक ही डीएनए है हमारा। कुछ थोड़े से लोग बाहर से आये होंगे- शक, हूण, कुषाण, मुगल, तुर्क या मंगोल, परन्तु वे सब इस मिट्टी की सुगन्ध में रच-बस गए हैं, उनकी नस्ल को पहचानना संभव नहीं है। हम सब एक हैं- एक ही है हमारी पहचान। हम सब भारत माँ की संतान हैं।

यह अंक

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंन्ती के 125 वें वर्ष में पाथेय कण के हर अंक में वर्ष भर नेताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी सामग्री प्रकाशित करने की योजना है। नेताजी द्वारा विदेशी भूमि से भारत की आजादी के लिए किए गये प्रयासों के पीछे की सोच तथा उसके क्रियान्वयन में आजाद हिन्द फौज का भारत की मुख्य भूमि पर प्रवेश- इस परिदृश्य को स्पष्ट करता एक आलेख इस अंक में है।

श्रीराम जन्मभूमि निधि समर्पण अभियान का अंतिम दिवस 27 फरवरी था। देशभर से उत्साहजनक समाचार मिल रहे हैं। समाज ने पूरे मन से प्रभु राम के मंदिर निर्माण हेतु अपना निधि समर्पण किया है। यह विश्व का सबसे बड़ा जनसम्पर्क अभियान भी था। इस अंक में इस अभियान से संबंधित कुछ अनुभव, प्रेरक प्रसंग आदि दिए जा रहे हैं। विदेशी तुर्क आक्रमणकारी पर विजय प्राप्त करने वाले महाराजा सुहेलदेव पर भी सामग्री देने का प्रयास हुआ है। आशा है, यह अंक पाठकों के लिए पठनीय होगा। ■

ज्ञान गंगा

अधर्मेणैधते तावत्, ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नाञ्जयति, समूलस्तु विनश्यति।।

अधार्मिक (पापी) मनुष्य अधर्म द्वारा पहले बढ़ता है और अपनी अनेक प्रकार की भलाई करता है। फिर शत्रुओं को भी जीत लेता है। परन्तु बाद में घर-बार समेत पूर्णतः नष्ट हो जाता है।

(मनुस्मृति-4/174)

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर हेतु बढ़-चढ़ कर योगदान

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले मंदिर के लिए हर कोई सहयोग करने को आतुर दिखाई दिया। निधि संग्रह टोली नहीं पहुँच पाई तो स्वयं आकर स्वेच्छा से बढ़-चढ़ कर अपनी समर्पण राशि दे रहे हैं। बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक-सब अपना योगदान दे रहे हैं। **मंदिर एवं ट्रस्ट भी मंदिर निर्माण हेतु सहयोग कर रहे हैं।**

अमरापुर संस्थान द्वारा निधि समर्पण एवं अमरापुर दरबार के पूज्य संत श्री नंदलाल को क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम पाथेय (फरवरी द्वितीय) का अंक भेंट करते हुए

अमरापुर तीर्थ संस्थान द्वारा 11 लाख भेंट

सिंधी समाज के प्रमुख तीर्थ स्थान जयपुर स्थित अमरापुर संस्थान के संत भगतप्रकाशजी महाराज की प्रेरणा से सिंधी समाज की ओर से 11 लाख रुपये की राशि संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम को भेंट की गई। **अजमेर के प्रेम प्रकाश आश्रम** के संत स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री ने 51 हजार रुपए भेंट किए।

163 वर्ष पहले अयोध्या के विवादित ढांचे में पूजा की थी सिखों ने, अब समर्पण निधि हेतु भी उत्साह

जोधपुर में आनन्द सिनेमा के नजदीक स्थित गुरुद्वारा गुरुसिंह सभा में सिख समाज की ओर से आयोजित कार्यक्रम में लाखों की धनराशि एकत्रित कर श्रीराम जन्मभूमि मंदिर हेतु समर्पित की गई। कार्यक्रम में हितेन्द्रपाल सिंह ने कहा कि आज से 163 वर्ष पूर्व 30 नवम्बर, 1858 को 25 सिखों ने अयोध्या के विवादित ढांचे में प्रवेश कर राम नाम के साथ हवन किया था तथा उस परिसर में श्रीराम का प्रतीक भी बनाया था।

नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ द्वारा 31 लाख

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर की ओर से प्रभु राम के मंदिर निर्माण हेतु 31 लाख का चेक समर्पित किया गया।

सैनाचार्य ने दिए 7.51 लाख रुपये

जोधपुर में सैनाचार्य स्वामी अचलानंद गिरि महाराज ने भक्तों के सहयोग से 7 लाख 51 हजार रुपये राममंदिर हेतु समर्पित किए हैं।

अंबेडकर महासभा द्वारा चांदी की ईंट

अंबेडकर महासभा ट्रस्ट की ओर से 14 फरवरी को 'अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम' के अध्यक्ष डॉ. लाल जी प्रसाद निर्मल ने श्रीराम मंदिर हेतु चांदी की ईंट भेंट की। उन्होंने कहा हम यह संदेश देना चाहते हैं कि प्रभु श्रीराम दलितों की आस्था का केन्द्र हैं तथा दलित समाज भी अयोध्या में मंदिर निर्माण को लेकर बहुत उत्साहित है।

मानव सेवा ट्रस्ट ने दिए एक करोड़ रुपये

जोधपुर के मानव सेवा ट्रस्ट की ओर से एक करोड़ की धनराशि राममंदिर हेतु समर्पित की गई। विहिप केन्द्रीय संगठन महामंत्री श्री विनायक राव देशपांडे को उक्त राशि का चेक दिया गया।

जावाल में घांची समाज की ओर से श्रीराम मंदिर हेतु 5 लाख का चेक दिया गया। घांची समाज धर्मशाला में एकत्रित हुए आस-पास के गांवों के समाज बन्धुओं ने इसमें सहयोग किया।

संविदाकर्मी ने दो माह का वेतन दिया

जयपुर के महारानी महाविद्यालय में संविदाकर्मी विवेक शर्मा ने अभाविप के

कार्यालय आकर अपने दो माह का वेतन रु.22 हजार 222 श्रीराम मंदिर निर्माण हेतु समर्पित किए।

संतों द्वारा राममंदिर के लिए सहयोग

उदयपुर क्षेत्र में चावंड के समीप कटावला मठ के मठाधीश घनश्याम महाराज के पास जब चावंड शाखा के बाल स्वयंसेवकों की टोली राम मंदिर हेतु निधि संग्रह के लिए पहुँची तो बाल कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए महाराज जी ने टोली से सभी कूपन ले लिए। महाराज जी ने कुल 1 लाख 11 हजार 11 सौ की राशि भेंट की।

सांगलिया पीठ (लोहसन) के महंत ओमदास जी महाराज श्रीराम जन्मभूमि के लिए निधि समर्पित करते हुए। साथ में क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम, जोधपुर प्रांत संघचालक हरदयाल वर्मा, सीकर विभाग संघचालक ग्यारसी लाल जाट व जिला संघचालक चितरंजनसिंह राठौड़

बाड़मेर के पूज्य 1008 श्री शम्भूनाथ जी सेलानी (महंत श्री चंचल प्रागमठ) द्वारा निधि समर्पण। साथ में हैं बाड़मेर जिला संघचालक मनोहर लाल एवं जिला अध्यक्ष आदूराम मेघवाल

अशोक सिंघल के परिवार ने समर्पित किए 11 करोड़

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के प्रमुख कर्णधार रहे अशोक सिंघल के परिवार ने राम मंदिर के लिए 11 करोड़ रुपये का निधि समर्पण किया है। 17 फरवरी को अरविंद सिंघल ने 6 करोड़ का द्वितीय चेक समर्पित किया। इससे पहले उन्होंने 5 करोड़ का चेक समर्पित किया था। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री श्रीवर्धन, चित्तौड़ प्रांत प्रचारक विजयानंद, विभाग संघचालक हेमेंद्र श्रीमाली, महानगर संघचालक गोविंद अग्रवाल, नगर-निगम उपमहापौर पारस सिंघवी आदि उपस्थित थे।

एक बार के समर्पण से संतोष नहीं हुआ तो दुबारा किया समर्पण

जोधपुर के एक सेवानिवृत्त शिक्षक उम्मेद सिंह ने निधि संग्रह अभियान के प्रारम्भ में 1 लाख 1 हजार की राशि समर्पित की थी। उनके मन को इससे संतोष नहीं था। प्रभु राम के लिए और ज्यादा देना चाहिए, इसी भाव से हेडगेवार भवन पहुँच कर 15 फरवरी को उन्होंने 1 लाख 1 हजार का एक और चेक समर्पित किया। वे निधि संग्रह हेतु भी सक्रिय रहे।

कोई नहीं पहुँचा तो स्वयं आ गए समर्पण निधि देने

राजस्थान लेखा सेवा के एक पूर्व अधिकारी (वर्तमान में भीलवाड़ा निवासी) के पास जब रामंदिर हेतु उनका समर्पण

सब कुछ नष्ट होने पर भी किया समर्पण

जोधपुर में संजय कॉलोनी में रहने वाले एक परिवार के यहां कार्यकर्ता गये तो पता चला कि 3 दिन पूर्व गैस सिलेंडर फटने से घर का सब कुछ नष्ट हो गया था। इसके बाद भी माताजी ने बड़ी तत्परता से बिना किन्तु-परन्तु किए श्रद्धापूर्वक समर्पण निधि दी।

दोहिते की दुर्घटना में मृत्यु, फिर भी समर्पण

दीगोद खंड के गांव दशलाना में राममंदिर हेतु पड़ौस से निधि संग्रह टोली की आवाज सुनकर एक माताजी रोते हुए आई। कारण पूछने पर पता चला कि उसके दोहिते की दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। रामभक्त जब उसे सांत्वना देकर आगे बढ़े तो माँ ने कहा- मैंने राममंदिर के लिए 500 रुपये बचाकर रखे थे, वे तो लेकर जाओ। घर के लोग दोहिते के दाह संस्कार के लिए गए हैं। आप लोग बाद में आयेंगे तो और ज्यादा करेंगे।

लेने कोई नहीं पहुँचा तो वे स्वयं हरिशेवा धाम पहुँच गए निधि समर्पण करने। वे 85 वर्ष के हैं तथा चलने में भी असुविधा होती है। महामण्डलेश्वर श्री हंसराम उदासी ने संघ के कार्यकर्ताओं को सूचित किया। विभाग संघचालक श्री चांदमल एवं प्रांत सह अभियान प्रमुख श्री रविन्द्र जाजू के पहुँचने पर उक्त रामभक्त ने 7 लाख का चेक उन्हें समर्पित किया।

एक करोड़ व अधिक का सहयोग किया

भीलवाड़ा के एक रामभक्त ने 1 करोड़ 11 लाख 11 हजार 11 रुपयों का समर्पण श्रीराम मंदिर निर्माण हेतु किया। **उदयपुर** में भी एक रामभक्त ने एक करोड़ रुपयों का चेक निधि समर्पण टोली को भेंट किया ।

नानी यह क्या हो रहा है

भीलवाड़ा के 6 वर्षीय केवल्य पालीवाल ने जब अयोध्या में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा श्रीराम मंदिर की नींव रखते देखा तो अपनी नानी से पूछा– नानी यह क्या हो रहा है? नानी ने बताया कि– 'रामजी के मंदिर का निर्माण हो रहा है।' उसने फिर पूछा– यह कैसे होगा? तो जवाब मिला– सब लोगों से धन संग्रह करके। बच्चे के मन की आस्था देखिये, उसने मॉडलिंग से मिले 2100 रुपये अपने माता–पिता के साथ जाकर हरिशेवा उदासीन आश्रम में समर्पित कर दिए।

दिन भर मजदूरी करके कूपन लिया

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर हेतु निधि संग्रह टोली जब **भीलवाड़ा के माणक नगर स्थित भील बस्ती** पहुँची तब एक घर के बालक किशन ने कहा कि आप शाम को आना।

बालक के पैरों में पहनने के लिए जूते–चप्पल भी नहीं थे। उस बालक ने दिनभर मजदूरी करके शाम को श्रीराम मंदिर निर्माण हेतु टोली से 100 रुपये का कूपन कटा कर प्रभु श्रीराम के चरणों में राशि समर्पित की।

पाँच माह की पेंशन राशि का किया समर्पण

सुल्तानपुर में श्रीमती कमला बाई शर्मा ने अपने पति स्वर्गीय मूलचन्द जी की पुण्य स्मृति में समर्पण टोली को घर बुलाकर 51,101 रुपये जो 5 माह की पेंशन राशि है, उसका समर्पण राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण हेतु किया।

राम जी का मंदिर बन रहा है, पैसे तो और कमा लेंगे...

पाली जिले के रोहट खण्ड में निधि समर्पण संग्रह के दौरान जब कार्यकर्ता सज्जनपुरा और सोनाईलाखा गांव में पहुँचे तो अस्थाई घर बना कर रह रहे कालबेलिया परिवारों को राममंदिर संबंधी जानकारी दी। बीमार बूढ़ी माताजी ने चारपाई पर लेटे–लेटे अपने पास से 110 रुपये के कूपन लिये। अपने ससुराल से बीमार माँ का हाल–चाल पूछने आई बेटी ने 50 रुपये के कूपन लेते हुए कहा कि मेरे पास इतने ही है यदि और होते तो वो भी दे देती।

लुम्बनाथ कालबेलिया ने पूरे परिवार के सभी बच्चों सहित 2100 रुपये का समर्पण किया। चन्दुनाथ ने 500 रुपये का निधि समर्पण करते हुये कार्यकर्ताओं से कहा– **'साहब, राम जी का मंदिर बन रहा है, पैसे तो और कमा लेंगे। ऐसा अवसर हमारे जीवन में वापस कब आयेगा।'** घरूनाथ कालबेलिया और उसकी माता जी ने भी कूपन लिए।

लकवा पीड़ित ने घर बुलाकर किया समर्पण

चित्तौड़ प्रांत के श्री चन्दीराम कुरानी पिछले 23 वर्षों से लकवे से पीड़ित हैं। जब उन्हें पता चला कि श्रीराम मंदिर के लिए धन संग्रह किया जा रहा है तो उन्होंने रामभक्तों को अपने घर बुलाया और 1 लाख 11 हजार 111 रुपये सहर्ष भेंट दिये।

अब यह जीवन राम जी का...

जयपुर के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ.शिव गौतम को 51 दिन आईसीयू में रहना पड़ा। वे कहते हैं, स्वस्थ होकर बाहर आया तो अहसास हुआ कि अब यह जीवन रामजी का, रामजी के लिए और रामजी द्वारा दिया गया है। उन्होंने अपने शिष्य डॉ.विजय दया को फोन किया कि मेरे पास अभी तक निधि संग्रह टोली नहीं आई है, कहीं मैं प्रभु राम के मंदिर हेतु सहयोग देने से वंचित न रह जाऊँ? उन्होंने रु. 1,11,111 का समर्पण किया।

निधि समर्पण में सक्रिय विहिप कार्यकर्ता की हत्या

राजधानी दिल्ली के मंगोलपुरी क्षेत्र में 10 फरवरी को विश्व हिन्दू परिषद की युवा इकाई बजरंग दल के कार्यकर्ता रिंकू शर्मा (25 वर्ष) की जिहादियों द्वारा घर में घुसकर चाकू से ताबड़तोड़ वार करके हत्या कर दी गई।

हैरान करने वाली बात यह है कि जिस आरोपी (इस्लाम) ने रिंकू शर्मा की हत्या की, उसी की पत्नी को रिंकू ने तीन साल पहले खून देकर उसकी जान बचाई थी। इस्लाम के भाई को जब कोविड हो गया था तब भी रिंकू ने ही उसे अस्पताल में भर्ती कराकर बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई थी।

रिंकू के परिवारजनों का कहना है कि दशहरे पर राम मंदिर पार्क में कार्यक्रम को लेकर दूसरे समुदाय के लोगों से विवाद चल रहा था। उसके बाद गली में आते-जाते ये लोग रिंकू को मारने की धमकी देते थे।

इसी विवाद के चलते मोहल्ले में रहने वाले नसरुद्दीन, इस्लाम, जाहिद, ताजुद्दीन और मेहताब आदि ने उक्त घटना को अंजाम दिया। वारदात वाले दिन मेहताब ने रिंकू पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला किया। हमले के दौरान चाकू रिंकू की रीढ़ की हड्डी में फंस गया। उसके बाद सभी आरोपी फरार हो गये। तथाकथित किसी भी सेक्युलरवादी या मानवतावादी नेता ने इस निर्मम हत्या की आलोचना नहीं की। 5 वर्ष पूर्व मृतक अखलाक खान के घर जाकर उसे एक करोड़ रु. देने वाले केजरीवाल भी इस मामले में चुप्पी साधे बैठे हैं।

विहिप द्वारा निंदा

राम विरोधी सेक्युलर बिरादरी और कुछ मुस्लिम नेता जिस प्रकार का भ्रम फैला रहे हैं और वैमनस्य पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं, रिंकू शर्मा की हत्या उसी जहर का परिणाम है, जो जेहादियों के मस्तिष्क में गहरे से भर चुका है।

दुर्भाग्य है कि किसी भी मुस्लिम या तथाकथित सेक्युलर नेता ने इस निर्मम हत्याकांड की आलोचना नहीं की। हिन्दू समाज इस परिस्थिति को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं कर सकता।

– डॉ.सुरेन्द्र जैन,
केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री, विहिप

रामगंज मंडी में रामभक्त पर बंदूक से हमला

9 फरवरी को रामगंज मंडी में जिला संघचालक श्री दीपक शाह जब निधि संग्रह अभियान के लिए राशि संग्रहित कर रहे थे तभी आशु पाया और उसके अन्य साथियों भाविक चावड़ा व सुफियान ने योजनाबद्ध तरीके से जानलेवा हमला करते हुए गोली मारकर उन्हें घायल कर दिया।

इस हमले में श्री शाह के दोनों पैरों में गोली लगी। गोली लगने के बाद भी श्री शाह और उनके साथियों ने दो लोगों को पकड़ लिया।

संघ के राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम तथा चित्तौड़ प्रांत प्रचारक श्री विजयानंद ने श्री दीपक शाह से एमबीएस अस्पताल जाकर कुशलक्षेम पूछी।

अद्भुत श्रद्धा

पत्नी की अंत्येष्टि से पूर्व पति का फोन– 'पत्नी चाहती थी सारे गहने राममंदिर हेतु दान करना, आप आकर ले जाएं'

जोधपुर में श्रीराम समर्पण निधि संग्रह टोली के एक सदस्य हेमंत घोष (जोधपुर प्रांत प्रचार प्रमुख) के पास 4 फरवरी को एक फोन आया–' श्रीमान, मैं विजय सिंह गौड़ बोल रहा हूँ। मेरी पत्नी आशा कंवर राममंदिर के लिए अपने सारे जेवर भेंट करना चाहती थी। आज वे हमें छोड़कर चली गई। (इसके बाद कुछ सिसकियां और फिर रुंधे गले से आवाज)... उनकी अंत्येष्टि से पहले कृपया आप लोग आइए... उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार सारे गहने प्रभु के लिए ले जाएं'।

उन्हें कहा गया कि वे पहले अंतिम संस्कार करें, उनकी पत्नी की इच्छा जरूर पूरी होगी। बाद में परिवार ने गहने बेचकर 7 लाख 800 रुपये मंदिर हेतु समर्पित कर दिए। श्रीमती आशा कंवर ने अपनी मृत्यु से तीन दिन पूर्व परिवारजनों के सामने राममंदिर हेतु सारे गहने भेंट करने की इच्छा जताई थी।

सुभाष जयन्ती का 125वां वर्ष

18 मार्च, 1944 को आजाद हिन्द फौज का भारत की मुख्य भूमि पर प्रवेश– एक ऐतिहासिक शौर्य गाथा

> ***"वायरलेस द्वारा नेताजी को संदेश भेज दिया गया कि आजाद हिंद फौज भारत भूमि में प्रवेश कर चुकी है। रात जागते में ही कट गई। सुबह तिरंगा फहराया गया, फौजी सलामी दी गई तथा आजाद हिंद का राष्ट्रगीत गाया गया– 'शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे, भारत भाग्य है जागा...'"***

18 मार्च वह ऐतिहासिक दिन है जब आज से 77 वर्ष पूर्व (1944 में) नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 'आजाद हिंद फौज' ने भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने के लिए 'दिल्ली चलो' तथा 'जय हिंद' का उद्घोष करते हुए म्यांमार (तत्कालीन बर्मा) से भारत की पूर्वी सीमा मणिपुर में प्रवेश किया था।

भारत की आजादी के लिए रास बिहारी बोस व अन्य देशभक्तों द्वारा सिंगापुर–जापान में गठित 'आजाद हिंद फौज' की कमान नेताजी के हाथ में सौंप दी गई थी। नेताजी ने इसमें और ज्यादा सैनिक भर्ती किए तथा युद्ध सामग्री से सज्जित किया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि जब अंग्रेज दूसरे विश्वयुद्ध में फंसे हैं तब उनकी राजनीतिक अस्थिरता का फायदा उठाते हुए स्वतंत्रता के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। यह इंतजार नहीं करना चाहिए कि युद्ध के पश्चात अंग्रेज हमें आजादी दे देंगे।

5 जुलाई, 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने नेताजी ने अपनी फौज को संबोधित करते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया।

21 अक्टूबर, 1943 को 'आजाद हिंद' सरकार का गठन करते समय नेताजी ने घोषणा की–

''आजाद हिंद सरकार का काम होगा कि वो भारत से अंग्रेजों और उनके मित्रों को निकाल बाहर करे।''

24 अक्तूबर, 1943 की रात्रि को 12 बजकर 5 मिनट पर नेताजी ने ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

आजाद हिंद फौज जापानी सैनिकों के साथ रंगून से कोहिमा और इम्फाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों के लिए रवाना हुई।

18 मार्च, 1943 को सैनिकों का दल अपने देश की सीमा के निकट पहुँच गया था। कांटेदार तारों की बाढ़ उनके और मातृभूमि के बीच थी। एक सैनिक ने आगे बढ़कर तार काट डाले और रास्ता बना दिया। सभी सैनिक पागलों की भाँति मातृभूमि पर दौड़ पड़े।

एक दूत भेजकर जापानी फौजी शिविर के माध्यम से वायरलेस द्वारा नेताजी को संदेश भेज दिया गया कि आजाद हिंद फौज भारत भूमि में प्रवेश कर चुकी है। रात जागते में ही कट गई। सुबह तिरंगा फहराया गया, फौजी सलामी दी गई तथा आजाद हिंद का राष्ट्रगीत गाया गया– 'शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे, भारत भाग्य है जागा...'

21 मार्च,1944 को सिंगापुर मुख्यालय में पत्रकार परिषद का आयोजन कर सारे संसार को समाचार दिया गया– 'आजाद हिंद फौज भारत की भूमि में प्रवेश कर चुकी है और भारत की आजादी की लड़ाई भारत भूमि पर लड़ी जा रही है।'

भारत की सीमा में सबसे निकट की चौकी 'मोडक चौकी' थी। आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजी सेना को वहाँ से मार भगाया तथा उस चौकी के साथ ही

लड़ाई के मोर्चे पर तैनात आजाद हिंद फौज के सैनिक

आस–पास की कई चौकियां जीतकर पूरे क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजी सेना ने पूरी शक्ति लगाकर उस क्षेत्र को हथियाना चाहा, परन्तु हर बार उसे मार खानी पड़ी।

आजाद हिंद फौज के कमांडर मेजर रतूरी, कैप्टन सूरजमल्ल, लेफ्टिनेंट अमर सिंह, ले.सिकंदर खान, मेजर महमूद अहमद, कैप्टन अमरीक सिंह, ले.रनजोधासिंह, अजायब सिंह, कैप्टन मनसुखलाल, नायक मोलर सिंह, रणजीत सिंह आदि के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज ने अदम्य साहस का परिचय दिया। अब्बा चौकी, हाका व फालम क्षेत्र, क्लंग–क्लंग चौकी, माईथून खूनों, कलादान क्षेत्र आदि पर आजाद हिंद फौज का अधिकार हो गया था। कई सैनिकों ने वीरगति प्राप्त की।

नेताजी ने इन बहादुरों को 'सरदारे–जंग', 'शेरे–हिंद', 'शहीदे–भारत', 'वीर–ए–हिंद' जैसे अलंकरणों से सम्मानित किया।

परन्तु इंफाल– कोहिमा के मोर्चे पर आजाद हिंद सेना को सफलता नहीं मिल पायी। यह युद्ध 4 अप्रैल,1944 से 22 जून, 1944 तक लड़ा गया। अंग्रेज सेना तथा आजाद हिंद फौज व जापानी सेना के बीच भयंकर युद्ध हुआ। लाशों पर लाशें बिछ रही थीं। समय पूर्व ही मानसून आने के कारण भारतीय सेना के लिए रसद आने के रास्ते दलदल और जल–प्लावन के कारण बंद हो गये थे। इम्फाल युद्ध में एक लाख जापानी सैनिक तथा बीस हजार आजाद हिंद के सैनिक मारे गए।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस अपनी सरकार और फौज के साथ आगे की तैयारियों में लग गए थे।

1944 में आजाद हिंद फौज ने दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया।

6 जुलाई,1944 को रेडियो रंगून से नेताजी ने महात्मा गांधी को संबोधित करते हुए कहा– ''देश के बाहर मेरा पहला काम (बाहर रह रहे) अपने देशवासियों को संगठित करना था... और वे (अब) भारत को आजाद कराने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं।... मैंने उन सरकारों से सम्पर्क किया जो हमारे दुश्मनों (अंग्रेजों) के साथ युद्ध कर रही हैं... धुरी राष्ट्र (जर्मनी–जापान आदि) अब भारत की आजादी के समर्थक हैं और वे हमारी मदद करने को तैयार हैं।... पूर्वी एशिया के मेरे देशवासी भारत की स्वतंत्रता के लिए हर तरह की कुर्बानी देने को तैयार हैं।''

...जापान, जर्मनी और सात अन्य मित्र राष्ट्रों ने आजाद हिंद की अस्थाई सरकार को मान्यता दे दी है... इससे सारी दुनिया में भारतीयों का सम्मान बढ़ा है। इस अस्थाई सरकार का एक ही लक्ष्य है, सशस्त्र संघर्ष करके अंग्रेजों की गुलामी से भारत को मुक्त कराना।...

... भारत की आजादी का आखिरी युद्ध शुरू हो चुका है। आजाद हिंद फौज के सैनिक भारत की भूमि पर बहादुरी से लड़ रहे हैं। जब तक आखिरी ब्रिटिश भारत से बाहर नहीं फेंक दिया जाता, जब तक नई दिल्ली में वायसराय हाउस पर हमारा तिरंगा शान से नहीं लहराता, यह लड़ाई जारी रहेगी।''

नेताजी ने अपने इस वक्तव्य में महात्मा गांधी से भारत की आजादी के लिए लड़ी जा रही लड़ाई में विजयी होने के लिए आशीर्वाद भी मांगा।

22 सितम्बर,1944 को शहीदी दिवस मनाते हुए नेताजी ने अपने सैनिकों से कहा–'हमारी मातृभूमि स्वतंत्रता की खोज में है। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। यह स्वतंत्रता की देवी की मांग है।'

कोहिमा–इंफाल युद्ध में हार के बाद जापान ने घुटने टेक दिए थे। 6 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने जापान के शहर हिरोशिमा पर तथा 9 अगस्त को नागासाकी पर परमाणु बम गिराया। लाखों लोग मारे गये। 10 अगस्त, 1945 को रूस भी जापान के विरूद्ध युद्ध में कूद पड़ा। अंततः जापान ने समर्पण कर दिया।

जापान द्वारा समर्पण के कारण तथा द्वितीय विश्व युद्ध की बदली हुई परिस्थितियों में युद्ध के द्वारा अंग्रेजों को भारत से भगाने का कार्य रुक गया था। परन्तु जब अंग्रेजों द्वारा आजाद हिंद फौज के सैनिकों को युद्धबंदी बनाकर दिल्ली के लाल किले में उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया तो देश की जनता भड़क गयी। भारत छोड़ो आन्दोलन को एक नई शक्ति मिली। अंग्रेजों की भारतीय सेना विशेषकर नौसेना में विद्रोह की स्थिति पैदा हो गयी थी। इन सब के कारण ब्रिटेन पर भारत को आजाद करने का दबाव बहुत बढ़ गया था। अंततः अंग्रेजों को 15 अगस्त,1947 में भारत को आजादी देनी पड़ी। ■

महाराजा सुहेलदेव

इतिहास पुरुष महाराजा सुहेलदेव

महाराजा सुहेलदेव श्रावस्ती (उ.प्र.) के सम्राट थे। उनकी पहचान मुस्लिम आक्रमणकारियों को हराने की है। 1033 ईस्वी में महमूद गज़नवी के सेनापति सैयद सालार मसूद गाजी और महाराजा सुहेलदेव की सेनाओं के बीच वर्तमान में उत्तर प्रदेश के बहराइच में भीषण लड़ाई हुई। इस युद्ध में महाराजा सुहेलदेव विजयी रहे। सुहेल देव की तरफ से थारू व बंजारा जातियों के राजाओं सहित सामान्य जन ने भी युद्ध लड़ा था। सुहेल देव ने 21 पारसी राजाओं का गठबंधन बनाकर मसूद गाजी को हराया। इन राजाओं में लखीमपुर, सीतापुर, लखनऊ और बाराबंकी के राजा भी शामिल थे।

युद्ध में घायल मसूद गाजी की मौत होने पर उसे वहीं दफना दिया गया। बाद में वहां मजार बनी तथा दिल्ली के सुल्तानों के काल में इसे दरगाह के रूप में प्रसिद्ध किया गया। वहां प्रतिवर्ष उर्स भी भरने लगा। उसमें बाराबंकी की दरगाह देवा शरीफ से आक्रमणकारी गाजी मियां की बारात आने लगी। ठीक उसी दिन हिंदूवादी संगठन महाराजा सुहेलदेव विजयोत्सव मनाते हैं। मध्यकाल में राष्ट्रभाव या कहें कि शत्रु-मित्र की पहचान इतनी तिरोहित होती गई कि एक आक्रमणकारी की मजार

29 दिसम्बर, 2018 को जारी डाक टिकट

(दरगाह) भी पूजी जाने लगी।

माना जाता है कि मसूद गाजी की मजार या दरगाह की जगह हिंदू संत और ऋषि बलार्क का एक आश्रम था। ऋषि बलार्क सुहेलदेव के गुरु थे। फिरोज शाह तुगलक ने उसे दरगाह में बदल दिया था।

महाराजा सुहेलदेव का संबंध हिन्दुओं की अति पिछड़ी माने जाने वाली राजभर या पासी जाति से बताया जाता है। इनका जन्म ई.1009 में बसंत पंचमी के दिन श्रावस्ती में हुआ। इनके पिता का नाम बिहारीमल तथा माता का नाम जयलक्ष्मी चंदेल था। महाराजा सुहेलदेव और उनके पूर्वज इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि पिछड़ी जाति के व्यक्ति भी अपनी योग्यता व बहादुरी से महाराजा बन सकते थे।

महाराजा सुहेलदेव के संबंध में लिखित विवरण कम मिलता है। 17वीं शताब्दी में लिखी गई फारसी भाषा की पुस्तक 'मिरात-ए-मसूदी' में सुहेलदेव द्वारा सालार मसूद अली गाजी को हराने की कथा मिलती है। यह पुस्तक अब्द-उर-रहमान चिश्ती ने लिखी थी। उत्तर प्रदेश के अवध और मैदानी इलाकों में उनकी वीरता के किस्से सुने और सुनाए जाते हैं। सुहेलदेव एक बहादुर राजा थे। चौदह अन्य राजा उनके अधीन थे। पुस्तक 'जैन धर्म के शासक' में बताया गया है कि उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर लिया था।

लोककथाओं में सुहेलदेव को कौडियाला नदी के तट पर लड़े गए युद्ध में पराक्रम के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है।

इतिहास मात्र वह नहीं जो औपनिवेशिक मानसिकता से लिखा गया हो- मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है, '' इतिहास मात्र वह नहीं है जो औपनिवेशिक मानसिकता वाले लोगों द्वारा लिखा गया हो। भारत का इतिहास वह भी है जो भारत के सामान्य जन में, भारत की लोकगाथाओं में रचा-बसा है।'' उन्होंने कहा कि महापुरुषों को राजनीतिक चश्मे से देखना गलत है।

प्रधानमंत्री मोदी ने यह बात बसंत पंचमी के दिन उत्तर प्रदेश के बहराइच में महान योद्धा महाराजा सुहेलदेव के स्मारक का शिलान्यास करते समय कही। स्मारक में महाराजा सुहेलदेव की घोड़े पर सवार 4.20 मीटर ऊँची मूर्ति भी लगाई जायेगी।

इस अवसर पर उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हजार साल बाद महाराजा सुहेलदेव को सम्मान मिला है।

गांधी जी ने हिन्दुत्व को सतत अनुसंधान का नाम कहा है– डॉ.मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत के अनुसार गांधी जी ने कहा है– हिन्दुत्व सत्य का सतत अनुसंधान है। उनके अनुसार यह काम करते–करते आज हिन्दू समाज थक गया है, परन्तु जब जागेगा, पहले से अधिक ऊर्जा लेकर जागेगा और सारी दुनिया को प्रकाशित कर देगा। डॉ.भागवत दिल्ली में 21 फरवरी को पुस्तक 'ऐतिहासिक कालगणना' के विमोचन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

यह कहा था गांधी जी ने!

यदि मुझसे हिन्दू–धर्म की व्याख्या करने के लिए कहा जाये तो मैं इतना ही कहूँगा–अंहिसात्मक साधनों द्वारा सत्य की खोज। कोई मनुष्य ईश्वर में विश्वास न करते हुए भी अपने–आपको हिन्दू कह सकता है। सत्य की अथक खोज का ही दूसरा नाम हिन्दू–धर्म है। यदि आज वह मृतप्राय, निष्क्रिय अथवा विकासशील नहीं रह गया है तो इसलिए कि हम थककर बैठ गये हैं और ज्यों ही थकावट दूर हो जायेगी त्यों ही हिन्दू धर्म संसार पर ऐसे प्रखर तेज के साथ छा जायेगा जैसा कदाचित् पहले कभी नहीं हुआ। निश्चित रूप से हिन्दू–धर्म सबसे अधिक सहिष्णु धर्म है।

– 24.4.1924, पृष्ठ 516–518, खंड–23, गांधी वाङ्मय

हिन्दू–धर्म एक जीवित धर्म है। उसमें चढ़ाव और उतार होते ही रहते हैं। वह संसार के नियमों का ही अनुसरण करता है। मूल में वृक्ष तो एक ही है; लेकिन उसकी शाखा–प्रशाखाएं विविध हैं। उसका आधार एक ही धर्मपुस्तक नहीं है। 'गीता'सर्वमान्य है; लेकिन वह केवल मार्गदर्शिका है। रूढ़ियों पर उसका असर बहुत कम होता है। हिन्दू–धर्म गंगा का प्रवाह है। वह मूल में शुद्ध है। उसमें मार्ग में मलिनता आती है, फिर भी जिस प्रकार गंगा की प्रवृत्ति अन्य में पोषक है उसी प्रकार हिन्दू–धर्म की प्रवृत्तियां भी अन्ततः पोषक हैं। हर एक प्रान्त में वह प्रान्तीय स्वरूप ग्रहण करता है, फिर भी उसमें एकता तो है ही।

– 7.2.1926, पृष्ठ 436–439, खंड–29, गांधी वाङ्मय

छद्म प्रचार का तर्कसंगत जवाब देने के प्रयास – मनोज कुमार

हिन्दू दर्शन व जीवन मूल्यों को विकृत ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास लम्बे समय से चल रहा है। तथ्यों को तोड़मरोड़ कर तथा संदर्भों को काट–छांट कर प्रसारित किया जाता है। इसके कारण समाज भ्रमित होता है। हिन्दू विचार एवं राष्ट्रीय विचार वाले संगठनों के विरुद्ध योजनापूर्वक दुष्प्रचार करने का षड्यंत्र चल रहा है। संघ एवं अन्य संगठनों की गलत छवि बनायी जा रही है। अतः समाचार के तथ्यों की जड़ तक जाकर उसके वास्तविक तथ्यों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। यह कहना है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री मनोज कुमार का। श्री मनोज कुमार विश्व संवाद केन्द्र के 21 वें स्थापना दिवस पर उदयपुर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि संचार व प्रसार माध्यमों में उक्त दुष्प्रचार का तर्कसंगत एवं तथ्यात्मक जवाब देने का कार्य विश्व संवाद केन्द्र कर रहा है। प्रसार माध्यमों में सोशल मीडिया पर फेक न्यूज (झूठे समाचार) व अन्तरराष्ट्रीय षड्यंत्र को उजागर करने में भी विश्व संवाद केन्द्र कार्यरत है। उदयपुर के विश्व संवाद केन्द्र प्रभारी कमल प्रकाश रोहिला ने बताया कि कार्यक्रम में पत्रकार हेमन्त शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'युद्ध में अयोध्या' की समीक्षा की गई।

संस्कार युक्त शिक्षा मनुष्य को पूर्णता प्रदान करती है– सुरेशचन्द्र

'प्राचीन काल से ही हमारे देश में संस्कारों का महत्व रहा है। जिस प्रकार जीवन में सोलह संस्कारों का महत्व है उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन में विद्यारम्भ संस्कार का भी महत्व है। यदि संस्कार युक्त शिक्षा नहीं है तो वह शिक्षा निष्फल है। संस्कार युक्त शिक्षा मनुष्य को पूर्णता प्रदान करती है।' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख श्री सुरेशचन्द्र ने उक्त उद्गार 16 फरवरी को विद्या भारती की जोधपुर प्रांत की मासिक ई पत्रिका **'विभा'** का विमोचन करते समय प्रकट किये। पत्रिका में विद्यारम्भ संस्कार, हमारे गौरव, प्रेरणा–स्त्रोत, शिशु शिक्षण तथा विद्या भारती की विशिष्टता व कार्यक्रमों को शामिल किया गया है।

कृषि उपज के उपभोक्ता द्वारा दी गई कीमत का 77 प्रतिशत बिचौलिया ले जाता है– भगवती प्रकाश

अंतिम उपभोक्ता जितनी कीमत देता है उसका लगभग 23 प्रतिशत ही किसान तक पहुँचता है, शेष 77 प्रतिशत बिचौलिया ले जाता है। **पिछले 30 वर्षों में किसान की आय में एक ठहराव आ गया है। किसान को उसकी फसल का लाभकारी मूल्य नहीं मिल पा रहा है। वर्तमान कृषि कानून किसान को मध्यस्थों के चंगुल से मुक्त कराकर किसानों की उपज का उचित मूल्य दिलाने का ही प्रयास है।** यह कहना है अर्थशास्त्री एवं गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा के कुलपति डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा का।

डॉ. शर्मा ने प्रेरणाशोध संस्थान द्वारा आयोजित एक वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि नए कृषि कानूनों में किसानों को स्वायत्तता दी गई है, जिससे वह उपज का उचित मूल्य प्राप्त कर सके।

प्रो.भगवती प्रकाश शर्मा ने कृषि बिल में कांट्रेक्ट फार्मिंग के लाभ गिनाते हुए कहा कि कांट्रेक्ट फार्मिंग से किसान खाद्यान्न शृंखला का हिस्सा बन सकेगा और उसे अपनी उपज को बेचने के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। जिस प्रकार कांट्रेक्ट दुग्ध उत्पादन से भारत में श्वेत क्रांति आयी और आज भारत पूरे विश्व में दुग्ध उत्पादन में पहले स्थान पर है, उसी प्रकार यह कृषि बिल भी किसानों को कांट्रेक्ट फार्मिंग से जोड़कर भारत को विश्व खाद्यान्न उत्पादन में पहले स्थान पर ला सकता है।

प्रताप गौरव केन्द्र

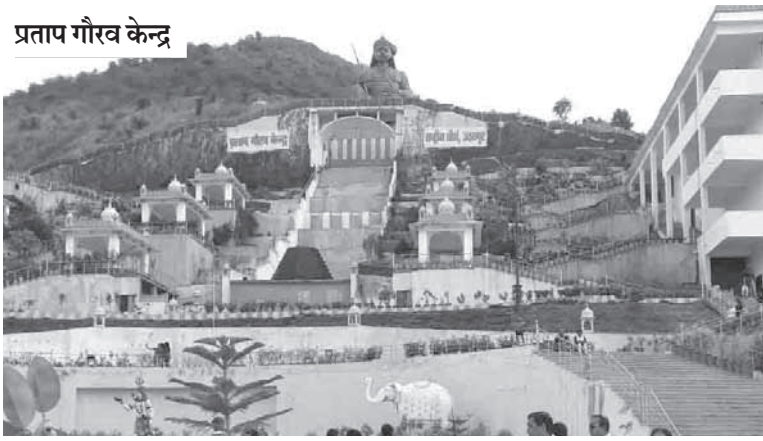

पुष्प प्रदर्शनी में उमड़ा जन सैलाब

उदयपुर के प्रताप गौरव केन्द्र में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी को देखने शहरवासियों की भीड़ उमड़ पड़ी।

उक्त प्रदर्शनी 13 से 16 फरवरी तक केन्द्र के एकलिंग चौक में लगी थी। प्रदर्शनी का उद्घाटन लक्ष्यराज मेवाड़ ने मोली खोलकर किया। फूलों की इस मन–भावन प्रदर्शनी को देखने विद्यालय एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में आये।

संघ के राजस्थान क्षेत्र के क्षेत्र प्रचारक प्रमुख श्री श्रीवर्धन ने कहा कि जो देश और समाज के लिए कुछ कार्य करता है, दुनिया उसे याद करती है। सपूत वह होता है जो अपने पूर्वजों की संपत्ति को बढ़ाए। महाराणा प्रताप ने अकबर के सामने सिर न झुकाते हुए मेवाड़ की आन–बान–शान की रक्षा की।

केन्द्र के निदेशक श्री अनुराग सक्सेना ने बताया कि युवा साथियों ने इस दौरान महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊँची प्रतिमा तक जाने में भी उत्सुकता दिखाई।

क्रीड़ा भारती का कार्यक्रम सूर्यरथ सप्तमी पर सूर्य नमस्कार–योग

क्रीड़ा भारती द्वारा सूर्यरथ सप्तमी पर 19 फरवरी को राजस्थान भर में सूर्य नमस्कार–योग महायज्ञ का आयोजन किया गया। क्रीड़ा भारती के क्षेत्र संयोजक मेघसिंह ने बताया कि इस अवसर पर राजस्थान के सभी जिलों में बालक–बालिकाओं सहित महिला और पुरुषों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सूर्य नमस्कार का महत्व

सूर्य नमस्कार मन एवं शरीर को स्वस्थ बनाकर इनको एकरूप करता है। यह व्यक्ति को दीर्घायु, मेधावी, बलशाली बनाकर पुरुषत्व शक्ति को बढ़ाता है। नेत्र रोगों व अकाल मृत्यु से बचाता है। सूर्य नमस्कार योगासनों में सर्वश्रेष्ठ है।

इसके अभ्यास से साधक का शरीर निरोग और स्वस्थ होकर तेजस्वी हो जाता है। सूर्य नमस्कार स्त्री, पुरुष, बाल, युवा तथा वृद्धों, सभी के लिए भी उपयोगी है।

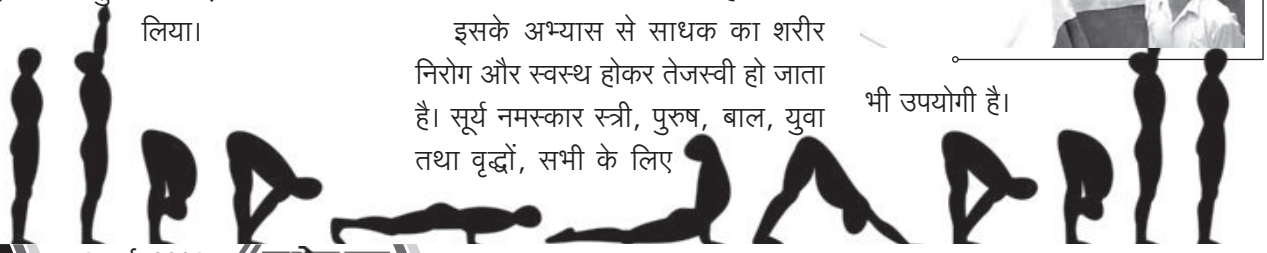

पं.दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति का आयोजन

भारतीय विचार विश्व को सुखी बना सकता है–स्वान्त रंजन

भारतीय विचार से हम देश ही नहीं, पूरी दुनिया को सुखी बना सकते हैं। दीनदयाल उपाध्याय ने इस विचार को नया कलेवर दिया। यही विचार आज शाश्वत विचार है। राष्ट्र को सशक्त करना आवश्यक है। इसके लिए आत्मनिर्भर बनना होगा।

यह कहना है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा.बौद्धिक प्रमुख श्री स्वान्त रंजन का। वे 14 फरवरी को जयपुर के निकट धानक्या में पं.दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के नाते संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि साठ के दशक तक दो विचारधाराओं से पूरा विश्व प्रभावित था। एक पूंजीवाद जिसका प्रतिनिधित्व अमेरिका करता था दूसरा साम्यवाद जिसका प्रतिनिधित्व रूस करता था। जब भारत स्वतंत्र हुआ तो प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इन दोनों से हटकर गुट निरपेक्ष मार्ग चुना, लेकिन वे ज्यादातर रूस से ही प्रभावित थे।

धानक्या स्थित पं.दीनदयाल स्मारक

कालांतर में पूंजीवाद और साम्यवाद की बुनियाद पर खड़े देश बिखर गए। ऐसे में एक अन्य विचार था जिसे पं.दीनदयाल उपाध्याय भारतीय विचार, सनातन विचार कहते थे। यह ऋषियों का विचार था और दीनदयाल ने इसी विचार को आगे बढ़ाने का काम किया।

छोटी–छोटी चीजें भी चाइना मेड थीं, पर हमने परिवर्तन कर दिखाया –बिरला

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने कहा कि कुछ समय पहले तक हम विचार करते थे कि बिना चीनी सामान के लाइट और फर्नीचर कैसे बनेगा। छोटे–छोटे गांवों में भी चप्पल, मटके, टॉर्च तक मेड इन चाइना आने लगे थे। हम पूर्ण रूप से हर चीज के लिए चीन व अन्य देशों पर निर्भर हो गए थे, लेकिन हमने कम समय में ही इन सब चीजों में परिवर्तन का काम किया है। पर्याप्त पीपीई किट बनाना असंभव लग रहा था, परन्तु कुछ दिनों में हमने बड़ी संख्या में पीपीई किट बना लिए।

यह सब विचार और संकल्प से हुआ। यह विचार एवं संकल्प पं.दीनदयाल उपाध्याय ने दिया। जब कोई चुनौती आती है तो उसका मुकाबला करने की सामर्थ्य हमारे पास है।

पाकिस्तान टूटने के कगार पर है– इंद्रेश कुमार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा है कि आने वाले कुछ वर्षों में पाकिस्तान पांच हिस्सों में बंट जाएगा। आज पाकिस्तान टूटने के कगार पर खड़ा है। वे 14 फरवरी को जयपुर में हिमालय परिवार, जनसंख्या समाधान फाउंडेशन सहित कई संगठनों के कार्यकर्ताओं को राजपूत सभा भवन में संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि चीन पाकिस्तान को खाने बैठा है। चीन हमेशा दुनिया पर कब्जा जमाने वाला देश माना जाता है। भारतीय सेना ने मजबूती से चीन को जवाब दिया है। इसी कारण चीनी सेना दो बार पीछे हटी है। इंद्रेश कुमार ने चीन को लेकर राहुल गांधी द्वारा उठाए गए सवालों पर उन्हें झूठा बताया।

उन्होंने कहा कि सीएए कानून के बारे में मुसलमानों को कुछ लोगों ने भड़काया और झूठा प्रचार किया कि यह नागरिकता का वेरिफिकेशन (सत्यापन) है, जबकि ऐसा नहीं है। यह कानून किसी की नागरिकता छीनने का नहीं है, बल्कि जिन पर जुल्म हुआ है उन्हें नागरिकता देने के लिए है। इंद्रेश कुमार ने बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणामों की ओर भी ध्यान खींचा।

खुदा रूपी राम और राम रूपी खुदा का मंदिर सब के लिए

इंद्रेश कुमार ने यह भी कहा कि खुदा रूपी राम और राम रूपी खुदा के अयोध्या में बनने वाले मंदिर में सभी सभ्यता और धर्मों के लोग आ सकेंगे। इसके निर्माण हेतु सभी जाति, धर्म व समुदाय के लोग स्वेच्छा से निधि समर्पण कर रहे हैं। राममंदिर निर्माण से अयोध्या नई पर्यटन नगरी बनेगी, जिसे देखने दुनिया भर के लोग भारत आएंगे।

उन्होंने बताया कि भारत में एक भी मस्जिद ऐसी नहीं है जिसमें मुसलमानों के 72 फिरके जाकर नमाज अदा कर सकें।

सेवा भारती द्वारा बसंत पंचमी उत्सव

सेवा भारती समिति,उदयपुर द्वारा सेंट्रल एरिया में संचालित बाल संस्कार केन्द्र पर बसंत पंचमी उत्सव मनाया गया एवं देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर सेवा भारती के चित्तौड़ प्रांत प्रचार प्रमुख गोपाल कनेरिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि देवी सरस्वती बुद्धि, प्रज्ञा व मनोवृतियों की संरक्षक हैं।

बाल संस्कार केन्द्र पर हुआ विद्यारम्भ संस्कार

सेवा भारती अनूपगढ़ की ओर से ढोली सेवा बस्ती में संचालित बाल संस्कार केन्द्र पर बसंत पंचमी को विद्यारम्भ संस्कार एवं हवन का आयोजन किया गया।

घुमन्तु बस्ती में स्कूल ड्रेस वितरण

मुंडिया रामसर की बंजारा बस्ती में राजस्थान प्रदेश अग्रवाल संगठन द्वारा 120 जोड़ी यूनिफॉर्म्स का वितरण किया गया। संघ के अ.भा.घुमन्तु कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

भारत विकास परिषद ने आयोजित की वाद-विवाद प्रतियोगिता

12 फरवरी को भारत विकास परिषद की जयपुर महानगर शाखा द्वारा अंतरमहाविद्यालय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन जामडोली स्थित केशव विद्यापीठ में हुआ। विषय था 'नई शिक्षा नीति से विद्यार्थियों को नौकरी के बेहतर विकल्प मिलेंगे'। वर्षा गुर्जर ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सेवा भारती की अनूठी पहल

सर्वजातीय सामूहिक विवाह में 18 जोड़े वैवाहिक बंधन में बंधे

सेवा भारती समिति, राजस्थान की ओर से बसंत पंचमी (16फरवरी) पर जयपुर के अम्बाबाड़ी आदर्श विद्या मंदिर में श्रीराम-जानकी सर्वजातीय सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। सम्मेलन में अग्रवाल, कीर, महावर, कोली सहित 9 समाजों के 18 जोड़े वैवाहिक बंधन में बंधे। दूल्हा-दुल्हन ने अग्नि के साथ गो माता को साक्षी मानते हुए सात फेरे लिये। समिति द्वारा पिछले 10 वर्षों में अब तक लगभग दो हजार जोड़ों का विवाह कराया जा चुका है।

किसान संघ द्वारा राजस्थान कृषि उपज मंडी अधिनियम में सुधार की मांग

भारतीय किसान संघ की राजस्थान इकाई द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से नीचे खरीद रुकवाने और राजस्थान कृषि उपज मंडी अधिनियम-1961 में सुधार किये जाने की मांग की है। किसान संघ के प्रदेश महामंत्री श्री कैलाश गदोलिया ने कहा कि स्थानीय किसानों को मंडी में माल बेचने की बाध्यता को खत्म कर उन्हें भी मंडी से बाहर अपना माल बेचने की कानूनी छूट दी जानी चाहिए एवं उत्तराखंड की तर्ज पर राजस्थान को मंडी क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और कर्नाटक की सरकारों द्वारा वहाँ के मंडी शुल्क को 0.35 से 1.00 प्रतिशत तक के न्यूनतम स्तर पर लाया गया है। जबकि राजस्थान में मंडी शुल्क 2.60 प्रतिशत है। यह शुल्क अप्रत्यक्ष रूप से किसानों को देना होता है, जबकि हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा किसान बिल पारित कर मंडी के बाहर फसल बेचने और खरीदने पर टैक्स की छूट प्रदान की गई है।

जन्म दिवस पर नमन

सूफी अम्बाप्रसाद
23 मार्च

(1858-1917)

चैतन्य महाप्रभु
फाल्गुन पूर्णिमा (28 मार्च)

(1486-1534)

अप्पा जी जोशी
30 मार्च

(1897-1979)

संत तुकाराम
चैत्र कृष्ण 2 (30 मार्च)

(1608-1650)

युगपुरुष स्वामी दयानंद सरस्वती

राजेन्द्र चड्ढा

हिन्दू जाति और भारत राष्ट्र के उन्नायक के रूप में स्वामी दयानंद सरस्वती का प्रादुर्भाव उस समय हुआ, जब भारतीय संस्कृति विदेशी प्रभाव से आक्रान्त थी। **शिक्षित वर्ग पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध से अपना स्वाभिमान, आत्मगौरव और अपनी प्राचीन गरिमा को भूल रहा था। आपने भारतवासियों की इस मोहनिद्रा को भंग कर राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया।**

शक्ति उपासना

ऋषि दयानंद का सबसे बड़ा योगदान है, हिन्दू जनता को सशक्त और सप्राण बनाना। सदियों के आक्रमण से कमजोर बनी हुई जनता को उन्होंने फिर से शक्ति का सन्देश दिया। ''बिना बलवान बने धराधाम से हमारा अस्तित्व मिटने वाला है।'' ऐसा उन्होंने पुकार-पुकार कर कहा।

छुआछूत विरोधी

अछूतपन के शाप से हिन्दू समाज को मुक्त करने में उनका बड़ा योगदान है। अछूतपन को उन्होंने वेद-विरुद्ध माना।

शिक्षा का वे व्यापक प्रसार चाहते थे। वे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त युवकों को भारतीय वांग्मय की गरिमा से प्रभावित करना चाहते थे। प्राचीन आदर्शों को जनजीवन की भित्ति बनाना उनका कार्यक्रम था। नैतिक आदर्शों से युक्त होने पर स्वतः ही सामाजिक और राजनीतिक समृद्धि प्राप्त होगी, ऐसा उनका विश्वास था।

बालिका शिक्षा

स्वामी दयानंद ने बालिका शिक्षा को आवश्यक बताया। स्त्रियों को भी समुचित शिक्षा प्रदान कर मनृस्मृति की भाषा में उन्हें पूजनीय माना जाये, ऐसा उनका मंतव्य था। उन्होंने अथर्ववेद का विवरण प्रस्तुत करते हुए बतलाया कि बालिकाओं को भी ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। ब्रह्मचर्य व्रत में उन्होंने अलौकिक चमत्कार देखा था।

चरित्र निर्माण पर जोर

महर्षि दयानंद के कथनानुसार शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य चरित्र-निर्माण है। मनुष्य का चरित्र उसके विभिन्न कार्यों और इच्छाओं की समष्टि तथा उसके मन के समस्त झुकावों का योग है। **हम वही हैं, जैसे हमारे विचार हैं। अतः बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में विद्यार्थियों का चरित्र-बल अत्यधिक विकसित हो, इसके लिए माता-पिता, अभिभावकों एवं शिक्षकों को पूर्ण सचेष्ट रहने की आवश्यकता है।** इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

स्वतंत्रता सेनानियों के प्रेरक

स्वामी दयानंद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की प्रेरणा थे। क्रांतिकारियों में श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानंद तथा लाला लाजपत राय उनके शिष्य एवं परम भक्त थे। बाल गंगाधर तिलक, विपिनचंद्र पाल, गेंदालाल दीक्षित, स्वामी श्री भवानी दयाल, भाई परमानन्द, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, यशपाल, गणेशशंकर विद्यार्थी आदि क्रांतिकारी देशभक्तों ने आर्य समाज से ही देशभक्ति की शिक्षा ग्रहण की थी। महात्मा गाँधी पर भी दयानंद के चिंतन का पर्याप्त प्रभाव पड़ा था। महात्मा गाँधी के गुरु गोपालकृष्ण गोखले और गोखले के गुरु न्यायमूर्ति गोविन्द रानाडे थे, जो दयानंद के परम शिष्य ही नहीं, अपितु दयानंद द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रतिष्ठित अधिकारी भी थे।

लाला लाजपतराय का कथन था ''स्वामी दयानंद ने मुझे मेरी आत्मा का दान दिया। मैं उनका मानसपुत्र होने के नाते उनका ऋणी हूँ।'' महर्षि के 'सत्यार्थ-प्रकाश' में देश की दुर्दशा के मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी वर्णन को पढ़कर मदनमोहन मालवीय के भी नेत्र सजल हो उठे थे।

सादगी पर बल

स्वामीजी ने खान-पान, आचार-विचार, वेश-भूषा, सभी जगह सादगी के सिद्धांत को अपनाने के लिए कहा। उनका विचार था कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक समान भोजन, वस्त्र और आवास की व्यवस्था हो। उन्होंने शिक्षकों को संबोधित करते हुए मनुस्मृति के उस उद्देश्य को धारण करने को कहा जिसमें बतलाया है कि गुरु अपने मष्तिष्क में यह भावना उत्पन्न करे कि धन और सांसारिक सुखों से विमुख हुए बिना वास्तविक धर्म का ज्ञान संभव नहीं।

शुद्धि आंदोलन

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुनः हिंदू धर्म में प्रवेश करने की प्रेरणा देकर शुद्धि आंदोलन चलाया था। उन्होंने इस आंदोलन के अंतर्गत लाखों मुसलमानों तथा ईसाइयों की शुद्धि कराकर सत्य सनातन वैदिक धर्म में वापसी कराई थी। 11 फरवरी, 1923 को भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की गई।

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण 1875 ई0, में काशी में मुद्रित हुआ। इसमें कुल 377 ग्रंथों का हवाला है। 210 पुस्तकों के प्रमाण दिए गए हैं। इस ग्रंथ में 1542 वेद मंत्रों या श्लोकों का उदाहरण दिया गया है और संपूर्ण प्रमाणों की संख्या 1,886 है। ■

– प्रज्ञा प्रवाह,
केन्द्रीय टोली सदस्य,दिल्ली

मूर्तिकार की सीख

एक मूर्तिकार था, उसने अपने बेटे को भी मूर्तिकला ही सिखायी। दोनों हाट में जाते और अपनी–अपनी मूर्तियाँ बेचकर आते। पिता की मूर्ति डेढ़–दो रुपये की बिकती। पर बेटे की मूर्तियों का मूल्य आठ–दस आने से अधिक न मिलता। हाट से लौटने पर पिता ने बेटे को पास बैठाकर उसकी मूर्तियों में रही त्रुटियों को समझाया और अगले दिन उन्हें सुधारने के लिये कहा।

यह क्रम वर्षों तक चलता रहा। पुत्र समझदार था, उसने पिता की बातें ध्यान से सुनीं और अपनी कला में सुधार करने का प्रयत्न करता रहा। कुछ समय बाद लड़के की मूर्तियाँ भी डेढ़–दो रुपये की बिकने लगीं। पिता अब भी उसी तरह समझाता और मूर्तियों में रहने वाले दोषों की ओर उसका ध्यान खींचता। बेटे ने और भी अधिक ध्यान दिया तो कला भी अधिक निखरी। अब उसकी मूर्तियाँ पाँच–पाँच रुपये की बिकने लगीं। सुधार के लिये समझाने का क्रम पिता ने तब भी बंद नहीं किया।

एक दिन बेटे ने झुँझलाकर कहा– *'आप तो दोष निकालना बन्द ही नहीं करते। मेरी कला अब आपसे भी अच्छी है, मुझे मूर्ति के पाँच रुपये मिलते हैं, जबकि आपको दो रुपये।'*

पिता ने कहा– 'बेटा! जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तब मुझे अपनी कला की पूर्णता का अहंकार हो गया और फिर मैंने सुधार की बात सोचना छोड़ दी। तब से मेरी प्रगति रुक गयी और दो रुपये से अधिक की मूर्तियाँ न बना सका। मैं चाहता हूँ कि वह भूल तुम न करो।

अपनी त्रुटियों को समझने और सुधारने का क्रम सदा जारी रखो, ताकि श्रेष्ठ कलाकारों की श्रेणी में पहुँच सको।

बाल प्रश्नोत्तरी

आपकी स्मरण शक्ति का स्तर क्या है? बाल मित्रों! पाथेय कण का 16 फरवरी, 2021 का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें और देखें कि आपकी स्मरण शक्ति का स्तर कैसा है। **सामान्य** : यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** : यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम** : यदि सभी प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।

1. श्रीराम मंदिर निर्माण हेतु ऋषिकेश में गुफावासी साधु ने कितने रुपये दिये हैं?
(क) साठ लाख (ख) पचास लाख (ग) दो करोड़ (घ) एक करोड़

2. भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी के लिए सुभाष बोस को माता–पिता ने कहाँ भेजा था?
(क) जापान (ख) अमेरिका (ग) इंग्लैण्ड (घ) जर्मनी

3. राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष कौन हैं?
(क) नृपेन्द्र मिश्र (ख) नरेन्द्र मिश्र (ग) नागेन्द्र मिश्र (घ) नारायण मिश्र

4. अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के कार्यकारी प्रमुख पद पर किसे नियुक्त किया गया है?
(क) राजाचारी (ख) भव्या लाल (ग) विजय रमानी (घ) विक्रम घोष

5. साप्ताहिक पत्रिका 'इंडिया टुडे' के एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री किसे माना गया है?
(क) अटल बिहारी वाजपेयी (ख) इंदिरा गांधी (ग) नरेन्द्र मोदी (घ) जवाहर लाल नेहरू

6. संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में कितने स्थायी सदस्य होते हैं?
(क) दस (ख) चार (ग) पाँच (घ) आठ

7. विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 10 मार्च (ख) 12 मार्च (ग) 15 मार्च (घ) 20 मार्च

8. मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में वनवासियों द्वारा चलाया गया अभियान किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?
(क) एकी आंदोलन (ख) असहयोग आंदोलन (ग) भारत छोड़ो आंदोलन (घ) सविनय अवज्ञा

9. पद्मश्री सम्मान पाने वाले श्याम सुन्दर पालीवाल राजसमंद जिले के किस गांव से हैं?
(क) नाथद्वारा (ख) पिपलांत्री (ग) आमेट (घ) कुम्भलगढ़

10. पं.दीनदयाल उपाध्याय का स्मारक जयपुर में किस स्थान पर बना हुआ है?
(क) बगरू (ख) फागी (ग) धानक्या (घ) बस्सी

(उत्तर पृष्ठ संख्या 17 पर)

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

1. आपके डर से अहमदशाह अब्दाली भरतपुर की सीमा से ही लौट गया।
2. आपने भरतपुर को एक शक्तिशाली राज्य बनाया।
3. पानीपत के युद्ध में आपने मराठों की सहायता की।

(उत्तर पृष्ठ संख्या 17 पर)

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

16 से 31 मार्च, 2021
(फाल्गुन शुक्ल 3 से चैत्र कृष्ण 3, वि. 2077 तक)

जन्मदिवस

21 मार्च (476) – विश्वविख्यात खगोलशास्त्री आर्यभट्ट
23 मार्च (1858) – क्रांतिकारी सूफी अम्बाप्रसाद
30 मार्च (1897) – संघ प्रचारक अप्पा जी जोशी
फा. शु.5(18मार्च) – महर्षि याज्ञवल्क्य
'' **6 (19 मार्च)** – माता शबरी
'' **8 (22 मार्च)** – संत दादूदयाल
फा. पूर्णिमा (28 मार्च)– चैतन्य महाप्रभु
– श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त मीरा बाई

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

20 मार्च (1858) – रानी अवन्ती बाई लोधी का बलिदान
23 मार्च (1931) – भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु की शहादत
25 मार्च (1931) – गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादत
29 मार्च (1917) – सरदार बलवंत सिंह सहित 5 क्रांतिकारियों की शहादत

महत्वपूर्ण घटनायें/अवसर

18 मार्च (1944) – आजाद हिंद फौज का भारत की मुख्य भूमि (मणिपुर) पर प्रवेश
30 मार्च – राजस्थान स्थापना दिवस
फा. पूर्णिमा (28 मार्च)– महाराणा प्रताप का महादेव बावड़ी (गोगुन्दा) पर राजतिलक
20 मार्च – विश्व खुशहाली दिवस
21 मार्च – विश्व वानिकी दिवस, विश्व दिव्यांग दिवस
22 मार्च – विश्व जल संरक्षण दिवस
24 मार्च – विश्व क्षय रोग (टी.बी.) दिवस
27 मार्च – विश्व रंगमंच दिवस

कॉलेज में प्रवेश के समय तिलक लगाकर स्वागत

जयपुर के कानोड़िया महिला महाविद्यालय द्वारा कोरोना काल के पश्चात कॉलेज में आने वाली छात्राओं को प्रथम दिन तिलक लगाकर मुँह मीठा कराया गया।

बसंत पंचमी पर विद्यारम्भ संस्कार

गायत्री शक्तिपीठ की ओर से जयपुर की ब्रह्मपुरी में 'बसंत पंचमी' पर कई बच्चों का विद्यारम्भ संस्कार करवाया गया। बच्चों को स्लेट या कॉपी पर चंदन अथवा रोली से ओम तथा स्वास्तिक लिखवाया। बच्चों के परिजनों ने पुष्प वर्षा की।

बालाजी ट्रस्ट की ओर से बेटियों का सम्मान

राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की उपस्थिति में मेंहदीपुर बालाजी ट्रस्ट की ओर से 751 मेधावी बेटियों का सम्मान किया गया।

सरस्वती की 19 फीट ऊँची प्रतिमा का महापूजन

जोधपुर के कायलाना रोड स्थित संबोधि धाम में बसंत पंचमी पर माता सरस्वती की 19 फीट ऊँची प्रतिमा का श्रद्धालुओं द्वारा महाभिषेक किया गया।

शिवाजी एवं श्रीगुरुजी जयन्ती समारोह

प्रताप नगर स्थित मानव कल्याण समिति, राजस्थान एवं अग्रवाल सेवा योजना, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आर्यवर्त कॉलेज के परिसर में वीर शिवाजी एवं संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी की जयंती मनाई गई।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी–1.(घ) 2.(ग) 3.(क) 4.(ख) 5.(ग) 6.(ग) 7.(ग) 8.(क) 9.(ख) 10.(ग)

उत्तर महापुरुष पहचानो- महाराजा सूरजमल

पंचांग–फाल्गुन (शुक्ल–पक्ष)

युगाब्द–5122, विक्रमी–2077, शाके–1942 (14 से 28 मार्च, 2021)

मीनमल मास प्रारम्भ– 14 मार्च, **फुलेरा दूज** – 15 मार्च, **पंचक समाप्त**– 16 मार्च (प्रातः 4.43 बजे), **विनायक चतुर्थी** –17 मार्च, **रोहिणी व्रत (जैन)** –20 मार्च, **होलाष्टक प्रारम्भ,अष्टान्हिक जैन व्रत** – 21 मार्च, **आमला एकादशी व्रत** –25 मार्च, **प्रदोष व्रत** – 26 मार्च, **पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन** –28 मार्च

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 14–15 मार्च **मीन** राशि में, 16 से 18 मार्च **मेष** राशि में, 19 से 21 मार्च उच्च की राशि **वृष** में, 22–23 मार्च **मिथुन** राशि में, 24–25 मार्च स्वराशि **कर्क** में, 26–27 मार्च **सिंह** राशि में तथा 28 मार्च को **कन्या** राशि में गोचर करेंगे।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष में **गुरु** और **शनि** यथावत मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी वृष और वृश्चिक राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** और **बुध देव** पूर्ववत क्रमशः वृष व कुंभ राशि में ही बने रहेंगे। **सूर्य** 14 मार्च को सायं 6.04 बजे तथा **शुक्र** 16 मार्च को रात्रि 3.00 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे।

दिल में हिंदुस्तान

देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ

SURYA

MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES

आत्मनिर्भर भारत की पहचान

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | **Toll Free No.: 1800 102 5657**

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

3

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज रावत

एक दिन विद्यालय में....

ब्लडी इंडियन! हमारे बीच में बोलने को किसने कहा है।

किंतु मैंने ऐसा क्या कह दिया...ऽऽ

ये गोरी चमड़ी वाले स्वयं को क्या समझते हैं... सब छात्र प्रतिरोध क्यों नहीं करते?

इसके अपमान का बदला मैं लूंगा

छुट्टी हुई... सुभाष गोरे छात्र के पीछे लगे थे... उन्होंने उसकी टांग खींच दी

आह ऽऽ.. यह किस इडियट ने मेरी टांग खींची है...रुकनाऽऽ

याद रखना जब भी किसी निर्दोष के साथ दुर्व्यवहार करोगे, मैं इसी तरह सबक सिखाऊंगा...

सुभाष! अच्छा सबक सिखाया तुमने उसे...

साथियो! अनुचित का विरोध तो होना ही चाहिए... अन्यथा इनका दुस्साहस और बढ़ेगा

आज से हम चुप नहीं रहेंगे... स्वाभिमान की रक्षा तो स्वयं को ही करनी होगी...

इससे तो बच कर ही रहना होगा ... यह अलग ही है

किशोर सुभाष में नेतृत्व गुण व साहस कूट-कूट के भरा था...

एक बार प्रभावती ने पुत्र के अध्ययन कक्ष के बाहर देखा कि...

ये चीटियां किधर से आ रही हैं?

अंदर जाकर देखा तो... अलमारी में मीठी रोटियां रखी हुई थी...

ओह!... चीटियां इन रोटियों में हो गई!... किन्तु ये यहां आई कैसे?

बेटा सुभाष! इधर आओ।

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
1 मार्च, 2021

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

ॐ

ADARSH VIDYA MANDIR
SHANKAR VIDYA PEETH

Admission in Class XI Science
100%
Scholarship in tuition fee for students with 90 or 90+% in class X

(A Place of Learning with a sense of Nationality)
A Residential English Medium Senior Secondary Public School for Boys
(C.B.S.E. Affiliation No. - 1730119, School Code No. - 03719, under the aegis of Vidya Bharati)

SALIENT FEATURES

100% result CBSE Board ...

SCHOOL

- The school is the modern concept of our age old Gurukul tradition.
- Value based education guided by principles of Vedas.
- Lush green campus situated away from din and bustle of the city.
- Well Qualified, experienced and dedicated faculty.
- Spacious Classrooms having LCD projectors and smart class enabled facilitation & Time Line Programs.
- Bridge enrichment classes as required.
- Focus on integral development of the child Physical, Moral, Spiritual, Sanskrit & Sanskriti, Music, Art & Craft.
- E-class room and well furnished computer lab.
- English Language Strengthening.

HOSTEL

- Dedicated wardens and homely care .
- Satvik (Pure Vegetarian) and delicious food.
- Facilities-entertainment, hot water for bath, news paper, magazine, purified drinking water, generator, play grounds.
- Furnished campus, security-guard and CCTV surveillance.
- Celebration of Indian festivals-Dusshera, Navratra, Ganesh Chaturthi, Holi etc.....
- Well equipped indoor & outdoor games facilities.
- Disciplined routine.
- Educational Tour.

Our Modern Labs

Physics Lab

Biology Lab

Computer Lab

Chemistry Lab

E-Lab

ADMISSION ANNOUNCEMENT 2021-2022

1. Admissions open for class V to IX & XI Science stream (limited seats).
2. Eligibility test will be conducted on 21th March, 2021 Sunday at 11.00 am, at Mount Abu & Other Centers mentioned below.

- **ADARSH VIDYA MANDIR (Sr. Sec.),** Raja Park, Ramgali No.-1 - Jaipur, Ph. No. : 0141-2653386
- **ADARSH VIDYA MANDIR,** J.N. Vyas Colony, Sector - 4 Bikaner, Mob. No. : 7073457555
- **'SHRUTAM' VIDYA BHARATI,** Jodhpur, Prant, Kamla Nehru Nagar - Jodhpur, Ph. No. : 0291-2757941
- **VIDYA BHARATI GUJARAT PRADESH,** G-8, Hari Nagar Society, Anand Park - Kankariya- Ahmedabad Ph. No. : 079-23823987
- **ADARSH VIDYA MANDIR,** Gadra Road, Adarsh Nagar, Barmer (Raj.), Ph. No. : 02982-232753
- **ADARSH VIDYA MANDIR (SEC.),** Front of Govt. college, Bhinmal, Jalore (Raj.), Ph. No. : 02969-220514
- **NAVIN ADARSH VIDYA MANDIR,** Near Bhaggu Kua, Suratgarh, (Shriganganagar), Ph. No. : 01509-291204 / Mob. : 9785229994
- **VIDYA NIKETAN, Sr. Sec. School,** Hiran Magri, Sector - 4, Udaipur, Ph. No. : 0294-2468954

3. Prospectus and Syllabus with model question papers for eligibility test can be obtained sending a demand Draft of Rs.625/- in favour of "ADARSH VIDYA MANDIR, MOUNT ABU" or can be downloaded from website (send with DD. of Rs. 625/-)

Parmendra Dashora
Chairman

Mahesh Agarwal
Secretary

Dheeraj Kr. Sharma
Principal

Ph. 9214174743, 9214673582 (O), 9214673627 (H) E-mail : avmsvp@yahoo.com I www.adarshvidyamandir.org

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मापकचन्द्
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 मार्च, 2021 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,